नवदुनिया
(29.04.2015)

खुद को जिंदा साबित करने दफ्तरों में भटक रहा किसान

पटवारी ने मृत बता दूसरे के नाम की जमीन

बीना के हिरनछिपा गांव का मामला

बीना (निप्र)। मालथौन तहसील के हिरनछिपा गांव में पटवारी ने एक किसान को कागजों में मृत घोषित कर उसकी पट्टे की जमीन को दूसरे के नाम कर दी। अब किसान अपने आप को ज़िंदा साबित करने के लिए पंचायत से लेकर जनपद, तहसीलदार और एसडीएम के दफ्तर में चक्कर काट रहा है। पीड़ित किसान की शिकायत पर बीना एसडीएम अरुण सिंह ने तहसीलदार को मामले की जांच करने के आदेश दिए हैं।

रमू पिता उमराव अहिरवार ने बताया कि गांव में हल्का नंबर 18 के खसरा नंबर 323, 305, 306 की जमीन का पट्टा उनके नाम पर हैं। इस जमीन का कुल रकबा 2.20 हेक्टेयर (लगभग 5.5 एकड़) थी। लेकिन पटवारी मोहनलाल नामदेव ने दस्तावेजों में हेरफेर कर खसरा नंबर 323 को छोड़कर शेष जमीन गांव के ही रमुआ अहिरवार के बच्चों कर दी और खसरा रिकार्ड में उसे फौत (मरा हुआ) दर्ज कर दिया। रमू का

रमू अहिरवार

कहना है कि 2011 तक उसका नाम राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज था। 2013 में उसे फौत दर्ज कर दिया गया। इसके बाद उसका नाम वोटर लिस्ट से भी काट दिया गया।

कमिश्नर, कलेक्टर से भी की शिकायत, नहीं हुई सुनवाई

रमू का कहना है कि इस संबंध में पिछले साल उसने संभागीय कमिश्नर और कलेक्टर से भी शिकायत की थी, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। कोई मामले को समझने को ही तैयार नहीं हैं। इतना ही नहीं प्रशासन ने अपनी गलती सुधारने के बजाए छिपाने के लिए रमू का वोटर लिस्ट से भी नाम काट दिया। उसकी ऋण पुस्तिका भी प्रशासन ने ले ली, और लौटाने से इनकार कर दिया। 2014 में ग्राम पंचायत ने प्रमाण-पत्र जारी कर रमू पिता उमराव को जीवित बताया है। रमू का नाम वोटर लिस्ट से काटकर दूसरे लोगों का नाम दर्ज कर दिया गया है।

मौत हुई रमुआ की और मृत बता दिया रमू को

रमू ने बताया कि उसके ही गांव के एक अन्य व्यक्ति रमुआ की कुछ वर्ष पूर्व मौत हुई थी। रमू और रमुआ दोनों के ही पिताओं के नाम उमराव थे। लेकिन पटवारी ने रमुआ को रमू समझते हुए उसे मृत घोषित कर दिया, और उसके नाम की जमीन रमुआ के बच्चों के नाम चढ़ा दी। जिंदा होते हुए भी रमू को सरकारी रिकार्ड में फौत दर्ज कर दिया गया।

मेरे हाथ कुछ नहीं

कंप्यूटर ऑपरेटर की गलती से रमुआ की जगह रमू हो गया अब सुधारना तो बड़े अफसरों को है। मेरा खुरई ट्रांसफर हो गया है, इसलिए अब मेरे हाथ में कुछ नहीं है।

मोहनलाल नामदेव, पटवारी